आत्मा बिकाऊ है

(एक और दो स्टेज पर उदास बैठे हैं। पीछे से आवाज : धरती पर अकाल पड़ गया। साधारण लोग भूख से मरने लगे। शैतान ने सोचा कि यही मौका है, जब वह अपनी शैतानियत का खेल सफलता से खेल सकता है। उसने अपने दो दूत व्यवसायी और सौदागर धरती पर भेजे।)

व्यवसायी : *(एक और दो से)* तुम उदास क्यों हो?

सौदागर : तुम्हारे चेहरे मुरझाए क्यों हैं?

एक : हम भूखे हैं।

दो : हमें दो दिन से रोटी नहीं मिली।

व्यवसायी : तुम्हें रोटी मिल सकती है।

सौदागर : तुम्हारी भूख दूर हो सकती है।

एक : कैसे?

दो : किस तरह?

व्यवसायी : अगर तुम अपनी आत्मा बेच दो।

सौदागर : अगर तुम अपनी ज़मीर का सौदा कर लो।

एक : आत्मा?

दो : ज़मीर?

एक : पर कौन खरीदेगा?

दो : कौन मोल लगाएगा?

व्यवसायी : मैं खरीदूंगा, मैं व्यवसायी हूं, आत्मा का व्यापार करता हूं।

सौदागर : मैं सौदागर हूं, ज़मीर का सौदा करता हूं।

एक : नहीं हम सीधे-सादे किसान हैं, हम अपनी ज़मीर नहीं बेच सकते।

दो : हम अपनी आत्मा का सौदा नहीं कर सकते।

व्यवसायी : ज़मीर तुम्हारी भूख नहीं मिटा सकती।

सौदागर : आत्मा तुम्हारे पेट की खुराक नहीं।

व्यवसायी : ज़मीर एक बेकार की चीज़ है।

सौदागर : मूर्ख आदमी अपनी ज़मीर से चिपके रहते हैं और भूखे मरते रहते हैं।

व्यवसायी : भले लोग सोचते हैं आत्मा बड़ी चीज़ है, वे अपनी आत्मा को बचाते रहते हैं, और उनका शरीर खत्म हो जाता है।

सौदागर : जब शरीर ही खत्म हो गया तो आत्मा रहेगी कहां?

व्यवसायी : पागलों को समझ नहीं आती।

सौदागर : बेवकूफ़ों को अक्ल नहीं आती।

व्यवसायी : मूर्ख बात बाद में समझते हैं।

सौदागर : नादान लोग बाद में सोचते हैं।

(एक और दो भ्रमित हो जाते हैं और आपस में सलाह करते हैं।)

एक : कहते तो ये ठीक हैं।

दो : ख़्याल इनके अच्छे हैं।

एक : ज़मीर को किसी ने हथेली पर रखकर चाटना है?

दो : आत्मा का किसी ने अचार डालना है।

एक : पहले पेट की भूख मिटनी चाहिए।

दो : पहले रोटी मिलनी चाहिए।

एक : हम अपनी आत्मा बेचेंगे।

दो : हम अपनी ज़मीर बेचेंगे।

औरत : नहीं... बेज़मीर आदमी तिनके का नहीं, घर का नहीं, घाट का नहीं, दर का नहीं।

(एक और दो का झुकाव अब औरत की तरफ हो जाता है।)

एक : हां, ज़मीर के बिना आदमी कैसा?

दो : हां, आत्मा के बिना ज़िंदगी कैसी?

(फिर वापिस जाने लगते हैं।)

सौदागर : ये एक औरत की बात मान गए हैं।

व्यवसायी : बेवकूफ हैं।

सौदागर : औरत की अक्ल चोटी के पीछे होती है।

व्यवसायी : ये औरत के मुरीद हैं।

सौदागर : ये जोरू के गुलाम हैं।

व्यवसायी : वो मर्द क्या जो औरत की सुने।

सौदागर : वो आदमी क्या जो औरत की माने।

(एक और दो फिर भ्रमित हो जाते हैं।)

औरत : खुदा के वास्ते उनके पीछे मत लगो।

एक : खुदा के वास्ते?

दो : कौन-सा खुदा?

सौदागर : जो तुम्हें भूखा मारता है।

व्यवसायी : जो तुम्हें रोटी नहीं दे सकता।

एक : हम खुदा को नहीं मानते।

दो : हम उसके अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते।

एक : हम आत्मा बेचेंगे।

दो : हम ज़मीर बेचेंगे।

(उनकी तरफ मुड़ जाते हैं।)

एक : हमारी ज़मीर का मोल चुकाओ।

दो : हमारी आत्मा को अपना बनाओ।

सौदागर : एक हाथ दो।

व्यवसायी : एक हाथ लो।

(मूक अभिनय द्वारा आत्माओं का आदान-प्रदान होता है।)

सौदागर : जाओ पहले भूख मिटाओ।

व्यवसायी : फिर यहां मुंह दिखाओ।

सौदागर : तुम हो गुलाम हमारे।

व्यवसायी : हम हैं मालिक तुम्हारे।

(सौदागर और व्यवसायी हंसते हैं, दोनों गुलामों की तरह फर्ज़ी सलाम करते हैं, फिर उनकी नज़र औरत पर पड़ती है।)

सौदागर : यह औरत हमारे जाल में नहीं फंसी।

व्यवसायी : फंस जाएगी जब इसके बच्चे भूखे मरेंगे।

सौदागर : औरत खुद भूखी रह सकती है, पर अपने बच्चों को भूखा नहीं देख सकती।

व्यवसायी : औरत बच्चों के लिए अपनी इज्ज़त बेच सकती है।

सौदागर : अपनी ज़मीर बेच सकती है।

व्यवसायी : पर हम इसकी इज्ज़त नहीं खरीदेंगे।

सौदागर : पर हमारे मालिक ने कहा है के सिर्फ ज़मीर खरीदो, सिर्फ़ आत्मा खरीदो।

व्यवसायी : ठीक है, जब आत्मा खरीद ली गई तो इज्ज़त भी खरीद ली गई। *(शैतानी हंसी हंसते हैं।)*

सौदागर : अब अपना काम शुरू करें।

व्यवसायी : दोनों को चमचे बनाएं?

सौदागर : ग्राहक घेरकर लाएं।

(एक और दो पेट पर हाथ फिराते हुआ आते हैं, उनके पेट बड़े हो गए हैं और मूंछें नीची हो गई हैं।)

एक : मालिक हुक्म करो।

दो : हमारी ज़मीर आपकी।

एक : हमारी आत्मा आपकी।

दो : हम आपके।

सौदागर : जाओ ढोल बजाओ।

व्यवसायी : टीन बजाओ।

सौदागर : लोगों को समझाओ।

व्यवसायी : उनके कानों में डालो।

सौदागर : आत्माओं के व्यवसायी आए।

व्यवसायी : ज़मीरों के सौदागर आए।

सौदागर : आत्मा बेचो, रोटी खाओ।

व्यवसायी : ज़मीर बेचो, भूख मिटाओ।

(दोनों ढोल व टीन लेते हैं और ढिंढोरा पीटते हुए औरत के नज़दीक जाते हैं।)

एक : आत्माओं के व्यवसायी आए।

दो : ज़मीरों के सौदागर आए।

एक : आत्मा बेचो, रोटी खाओ।

दो : ज़मीर बेचो, भूख मिटाओ।

एक : आत्माओं के व्यवसायी आए।

दो : ज़मीरों के सौदागर आए।

औरत : ढोल बजाओ।
टीन बजाओ।
मौत के व्यवसायी आए।
काल के सौदागर आए।

एक : यह तो मूर्ख है।

दो : यह तो अक्ल से खाली है।

एक : इसकी अक्ल चोटी के पीछे।

दो : इसकी अक्ल पैरों के नीचे।

एक : ढोल बजाएं।

दो : टीन बजाएं।

एक : आत्मा के व्यवसायी आए।

दो : ज़मीरों के सौदागर आए।

(विंग के एक ओर से निकलते हैं और फिर थोड़ी देर बाद वे ढिंढोरा पीटते फिर विंग में से निकलते हैं लोग धीरे-धीरे इकट्ठे हो रहे हैं।)

एक : सुनो, सुनो, लोगो!

दो : सुनो, सुनो, बापू आदम के पुत्रों!

एक : माता हव्वा के बच्चो!

दो : युवको और युवतियो!

एक : बच्चो और बच्चियो!

दो : माताओ और बहनों!

एक : पिता और पत्नियो!

दो : इस धरती के भाग जगे।

एक : इस धरती पर नियामतों की बारिश हुई।

दो : व्यवसायी आए।

एक : सौदागर आए।

दो : सोना देते मुफ़्त मुफ़्त में।

एक : पैसे बांटते हाथों-हाथ।

(लोगों में से अ और ब बाहर आते हैं।)

एक : हां सोना देते, आत्मा लेते।

दो : पैसा देते, ज़मीर लेते।

अ : आत्मा?

ब : ज़मीर?

एक : हां एक बेफायदा चीज़।

दो : एक फालतू का भार।

(ढोल बजाते और टीन पीटते चले जाते हैं। अ और ब आपस में बातें करते हैं।)

अ : ये किस तरह के सौदागर हैं?
ब : ये किस तरह के व्यवसायी हैं?
अ : सौदा तो होता है गेहूं का।
ब : व्यापार तो होता है पशुओं का।
अ : सौदा तो होता है कपड़े का।
ब : व्यापार तो होता है खेती का।
अ : ये आत्मा का सौदा करते हैं।
ब : ये ज़मीर का व्यापार करते हैं।
अ : इस तरह की बात पहले कभी नहीं सुनी।
ब : इस तरह की बात पहले कभी कानों में नहीं पड़ी।
अ : इस तरह की बात किसी ने नहीं कही।
ब : इस तरह की बात किसी ने मुंह से नहीं कही।
अ : पर यह आत्मा है कहां?
सौदागर : मैं बताता हूं।
व्यवसायी : मैं रोशनी डालता हूं।
औरत : चीज़ लोगों की, रोशनी ये डालते हैं।
(हंसती है।)
सौदागर : यह हंसती है।
व्यवसायी : यह दांत निकालती है।
सौदागर : इसकी बात मत सुन।
व्यवसायी : इसकी तरफ ध्यान मत दे।
सौदागर : औरत की जो बात सुनें।
व्यवसायी : वे औरत मुरीद, जोरू के ग़ुलाम।
(अ और ब फिर इसकी तरफ ध्यान नहीं देते हैं।)
सौदागर : आत्मा नाम की चीज़ शरीर में बसती है।
अ : बाईं ओर कि दाईं ओर?
सौदागर : न यह बाएं, न यह दाएं।
व्यवसायी : यह बीचों-बीच लटक रही।
सौदागर : बेफ़ायदा-सी।
व्यवसायी : बेमतलब-सी।
अ : फ़ायदा कोई नहीं, तुम क्यों लेते हो?
ब : तुम क्यों सोना देते हो?

सौदागर : हम मूर्ख सौदागर।

व्यवसायी : दयावान व्यवसायी।

औरत : नहीं ये चतुर सौदागर, लाखों की चीज़ कौड़ियों के भाव में मांगते हैं।

अ : लाखों की चीज़?

औरत : हां।

ब : कैसे?

औरत : आत्मा मनुष्य को प्रेम करना सिखाए।

अ : प्रेम?

औरत : मनुष्य को दया करना सिखाए।

ब : दया?

औरत : मनुष्य को बुरे-भले की पहचान करवाए।

अ : बुरे-भले की।

औरत : मनुष्य को मनुष्य बनाए।

सौदागर : पर मनुष्य को भूख दिखाए।

सौदागर : आत्मा एक हवा है।

व्यवसायी : मनुष्य को हवा में उड़ाए।

सौदागर : और फिर ज़मीन पर गिराए।
(हंसता है)

अ : हम भूखे हैं। क्या आत्मा रोटी दे सकती है?

ब : क्या ज़मीर भूख मिटा सकती है?

सौदागर : सवाल का कोई जवाब नहीं।

व्यवसायी : प्रश्न का कोई उत्तर नहीं।

औरत : क्या मनुष्य सिर्फ़ रोटी के लिए पैदा हुआ है?

अ : पेट न पड़ी रोटी।

एक-दो : *(आते हुए)* सारी बातें खोटी।

एक : आत्मा के व्यवसायी आए।

दो : ज़मीर के सौदागर आए।

एक : समय मत गंवाओ, एक हाथ दो।

दो : वक़्त मत गंवाओ।

एक : एक हाथ दो।

दो : दूसरे हाथ लो।
(अब स्टेज पर भी शोर-सा होता है, जैसे कोई मंडी लगी हो।

एक व्यापारी किस्म का आदमी आगे आता है।)

अ : बहुत बड़ा आदमी।

ब : इसकी आत्मा का मोल बहुत सारा।

व्यापारी : यह लो आत्मा, इसका मोल चुकाओ।

सौदागर : *(हाथ बढ़ाकर लेते हुए, फिर हथेली पर देखते हुए।)* कहां है ?

व्यवसायी : यहां तो कुछ भी नहीं दीखता।

सौदागर : यहां तो कुछ भी नहीं मिल रहा।

(व्यापारी हैरान-परेशान है।)

व्यापारी : 'हांय' मेरी आत्मा कहां गई ?

(मूक अभिनय में उसकी तड़पन)

लोगो मेरी आत्मा कहां गई ?

मैं शहर का बड़ा व्यापारी।

मेरी शान बड़ी निराली।

मेरी आत्मा कहां गई ?

कहां गई ?

कहां गई ?

औरत : मैं बताती हूं कहां गई ?

व्यापारी : मेरी आत्मा कहां गई ? हाय मेरी आत्मा कहां गई ?

औरत : तेरी आत्मा उस वक्त मरी जब से काला धंधा किया।

काला धंधा।

खोटा धंधा।

अ : काला धंधा।

ब : खोटा धंधा।

सौदागर : आत्मा ही नहीं, सौदा क्या करें ?

व्यवसायी : ज़मीर ही नहीं, मोल क्या चुकाएं ?

(लोग हंसते हैं और व्यापारी बाहर निकल जाता है।)

सौदागर : एक से पीछा छूटा।

व्यवसायी : इसकी मूंछ नीची हुई।

(फिर डम डम डम बजती है, शोर होता है। एक डॉक्टर आता है और शोर थम जाता है।)

डॉक्टर : मैं शहर का बड़ा डॉक्टर, रोगियों का इलाज हूं करता, मौत से उनको दूर ले जाता।

(अ और ब आपस में बातें करते हैं।)

अ : यह तो बड़ा डॉक्टर।

ब : अस्पतालों का मालिक।

अ : इसकी आत्मा बड़ी सारी।

ब : ज़मीर का मोल बहुत सारा।

(डॉक्टर बड़ी अकड़ से आगे आता है। सौदागर और व्यवसायी मूक अभिनय से उसकी आत्मा निकालते हैं। उनका एक्शन इस तरह का जैसे बड़े साइज की कोई चीज़ परख रहे हों।)

सौदागर : *(सिर हिलाते हुए)* यह तो घुन की मारी।

व्यवसायी : *(सिर हिलाते हुए)* यह तो कीड़े की मारी।

सौदागर : इसका मोल एक कौड़ी।

व्यवसायी : इसका मोल डेढ़ कौड़ी।

अ : इतनी बड़ी आत्मा मोल एक कौड़ी?

ब : मोल डेढ़ कौड़ी?

(डॉक्टर के चेहरे पर घबराहट के चिह्न)

सौदागर : बड़ी चीज़ पर घुन की मारी।

व्यवसायी : कीमती वस्तु पर कीड़े मारी।

डॉक्टर : इसे कीड़े ने कब खाया?

औरत : इसे कीड़े ने तब खाया जब तूने अपना फर्ज़ भुलाया। गरीब तेरे दर पे आया, न तूने उसका रोग मिटाया।

सौदागर : घुन खाई आत्मा का मोल एक कौड़ी।

व्यवसायी : कीड़े मारी ज़मीर का मोल डेढ़ कौड़ी।

(लोग हंसते हैं और वह शर्मिंदा होकर चला जाता है।)

सौदागर : इससे भी पीछा छूटा।

व्यवसायी : कमकस जहान पाक।

(ढिंढोरची फिर ढिंढोरा पीटने लग जाते हैं, लोगों का शोर-शराबा फिर शुरू हो जाता है।)

एक : आओ, आओ आत्मा बेचो, सोना कमाओ।

दो : ज़मीर बेचो, पैसा बनाओ।

अ : तू अपनी आत्मा बेच दे।

ब : मैं?

अ : पर तेरी तो पहले ही बिकी हुई है।

ब : तेरी बड़ी तेरे पास है?
अ : तुझे मैं भूला हूं कहीं?
ब : और मैं तूझे भूला हूं कहीं?
अ : क्यों मैंने क्या किया?
ब : तूने अफ़सर के घर घी नहीं पहुंचाया?
अ : और तू फलों की टोकरी नहीं देकर आया?
ब : फल तो मेरे अपने बाग के थे।
अ : घी तो मेरी अपनी भैंस का था।
ब : चल, परे हट, बेआबरु कहीं का।
अ : चल, परे हट, बेज़मीर कहीं का।
सौदागर : ये भी खाली।
व्यवसायी : पल्ले नहीं धेला, करती मेला मेला।
(ढिंढोरची फिर ढोल बजाने लगता है। एक कवि आता है। उसकी ड्रैस उसी तरह की है, गुमसुम-सा अपने में मग्न कुछ लिख रहा है। उसके कानों के पास डमडम होती है तो वह सहम जाता है।)
कवि : यह शौर कैसा है?
एक : आत्मा के व्यवसायी आए।
दो : ज़मीरों के सौदागर आए।
एक : आत्मा बेचो, सोना पाओ।
दो : ज़मीर बेचो, पैसा कमायो।
(कवि वापिस चल पड़ता है, जैसे कोई दिलचस्पी न हो।)
कवि : हम तो यारो।
अपना दिलोजां, आत्मा।
उसके कदमों में हारे।
उसकी जुल्फों के बलिहारे।
अ : किसके?
ब : महबूब के।
सौदागर : यह दिलफेंक आशिक।
व्यवसायी : असल में नाकारा।
सौदागर : जैसा आया।
व्यवसायी : वैसा चला गया।

(बच्चे मां से बातें कर रहे हैं।)

छोटू : मां, भूख लगी है।

गुड़िया : मेरे यहां दर्द हो रहा है।

मां : तुम यहां बैठो, मैं तुम्हारे लिए रोटी लाती हूं।

छोटू : मां जल्दी आना।

एक : आत्मा के व्यवसायी आए।

(मां जाती है। मास्टर आता है।)

दो : ज़मीरों के सौदागर आए।

(डम डम)

अ : मास्टर जी, ज़मीर का सौदा कर लो।

ब : इनकी ज़मीर तो पहले ही बिकी हुई है।

अ : क्यों?

ब : ये पैसे लेकर पास करते हैं।

अ : पैसे लेकर फेल करते हैं।

ब : बच्चों को कहते हैं 'सच बोलो'।

अ : खुद हर रोज झूठ बोलते हैं।

ब : बच्चों को कहते हैं ईमानदार बनो।

अ : और खुद उनकी फीसें डकार जाते हैं।

सौदागर : ये मास्टर हैं बहुत भले।

व्यवसायी : इस हमाम में नंगे खड़े।

(बाहर फिर सें ढिंढोरची की आवाज़ आती है, आत्मा के व्यवसायी आए, ज़मीर बेच लो, ज़मीर के सौदागर आए। सफेद कपड़ों में एक संत आता है।)

संत : कहां हैं वे सौदागर?
कहां हैं वे व्यवसायी?

सौदागर : कौन हो तुम?

व्यवसायी : क्या है काम?

संत : धर्मों का सेवक।
आत्माओं का रखवाला।

सौदागर : तुम?

संत : हां *(वे हंसते हैं)*

सौदागर : हम तुम्हें खूब पहचानते हैं।

व्यवसायी : तुम हो हमारे यार पुराने।

सौदागर : मिलजुल कर जनता को बुद्धू बनाना।

व्यवसायी : तुम्हारा हमारा है काम पुराना।

सौदागर : ज़मीर, आत्मा नहीं तुम्हारे पल्ले।

व्यवसायी : बेशक जो चाहे चालें चले।

अ : लोगों की आत्माओं का रखवाला।

ब : पर अपनी आत्मा ?

अ : कोई नहीं, कोई नहीं।

(वह भी जाता है।)

सौदागर : यह भी गया।

व्यवसायी : कमकस जहान पाक।

(बाहर से फिर आवाज़ आती है। इंतज़ार करते हैं, पर कोई नहीं आता।)

सौदागर : उस्ताद जी, यह धरती का कौन सा टुकड़ा ?
यहां आत्माओं की मंडी इतनी मंदी।

व्यवसायी : नाम नहीं मालूम शिष्य।
तुम इसकी निशानियां देख लो अपने गुरु जी से पूछेंगे।

सौदागर : इसके उत्तर में ऊंचा पहाड़ है।

व्यवसायी : दक्षिण में सागर है।

सौदागर : गुम्बदों जैसे ईश्वर के कई घर हैं।

व्यवसायी : किसी को मस्जिद कहते हैं, किसी को मंदिर कहते हैं, किसी को गुरुद्वारा।

सौदागर : ईश्वर के इतने सारे घर।

व्यवसायी : आत्माओं की मंडी, इतनी मंदी।

(एक और दो ढोल बजाते और टीन पीटते आते हैं।)

एक : मालिको, अब हम बहुत थके।

दो : न कोई हमारी तरफ देखे।

एक : सब है खाली-खाली।

दो : जैसे रोटी के बिना थाली।

सौदागर : कोशिश करो।

व्यवसायी : यत्न करो।

(सौदागर व व्यवसायी का ध्यान बच्चों की तरफ चला जाता है।)

सौदागर : इन बच्चों पर मुझे तरस आ रहा है।

व्यवसायी : मुझे रहम आ रहा है।

सौदागर : *(ऊंची आवाज़ में)* बच्चो रोटी ले लो।

व्यवसायी : *(ऊंची आवाज़ में)* बच्चो भूख मिटा लो।

छोटू : हमें दान नहीं लेना।

गुड़िया : हमें भिक्षा नहीं लेनी।

सौदागर : थोड़ी सी आत्मा दे दो।

व्यवसायी : थोड़ी सी ज़मीर बेच दो।

(आपस में सलाह करते हैं)

छोटू : बहन, थोड़ी सी आत्मा बेच दें और रोटी ले लें।

गुड़िया : हां, भूख मिटा लें।

(बच्चे सौदागरों के नज़दीक जाते हैं।)

छोटू : सौदागर जी, थोड़ी सी आत्मा ले लो और रोटी दे दो।

सौदागर : एक हाथ दो।

व्यवसायी : दूसरे हाथ लो।

(वे दोनों उठाने लगते हैं, पर उनकी आत्माएं बहुत ही भारी हैं। यह सबकुछ मूक अभिनय में है।)

सौदागर : बड़ी ही भारी।

व्यवसायी : साबुत सारी।

सौदागर : न यह बांकी।

व्यवसायी : न यह टेढ़ी।

सौदागर : बिल्कुल ख़ालिस।

व्यवसायी : बिल्कुल शुद्ध।

सौदागर : और न खाली-खाली।

व्यवसायी : न यह जालों वाली।

सौदागर : न यह घुन खाई।

व्यवसायी : न यह कीड़े मारी।

सौदागर : इसका मोल बड़ा ही भारी।

व्यवसायी : इसका मोल बड़ा ही भारी।

सौदागर : रोटी दें, पीछा छुड़वाएं।

व्यवसायी : टुकड़ा दें और जान छुड़वाएं।

(बच्चों को थैले में से रोटी का टुकड़ा निकालकर देते हैं और वे

बैठकर खाने लगते हैं, मां आती है इधर-उधर बच्चों को देखती है पर सौदागर और व्यवसायी के पास बच्चों को देखकर चीख निकल जाती है।)

औरत : नहीं, मेरे बच्चों को छोड़ दो।

सौदागर : कौन से बच्चे ?

व्यवसायी : किसके बच्चे ?

औरत : कोख से जन्मे मेरे बच्चे।

सौदागर : *(तंज़ लहजे में)* इसके बच्चे ?

व्यवसायी : हां इसके बच्चे ?

सौदागर : क्यों बच्चो ! यह तुम्हारी मां है ?

व्यवसायी : कहो बच्चो, हां या ना।

(मां उन्हें मूक अभिनय से हां कहने के लिए प्रेरित करती है पर वे सिर हिला देते हैं।)

औरत : ये मां को भूले।
जननी को भूले।
तुम आत्मा के हत्यारे।
तुम मौत के व्यवसायी।

सौदागर : ये तुझे मिल सकते हैं।

व्यवसायी : तू इन्हें ले सकती है।

औरत : कैसे ?

सौदागर : अगर तू ज़मीर का सौदा कर ले।

व्यवसायी : अगर तू आत्मा बेच दे।

औरत : नहीं मैं यह नहीं कर सकती।

सौदागर : तो तुझे तेरे बच्चे नहीं मिल सकते।

(औरत निराश होकर लोगों की तरफ मुड़ आती है।)

औरत : इस धरती के 'पुत्तरो'
माताओं के जन्मे।
एक मां की पुकार-मां, जिसका जिगर धरती जितना।
काल के सौदागर आए।
मौत के व्यवसायी आए।
इन्होंने मौत खरीदी, सोना दिया।
इन्होंने बाल खरीदे, टुकड़ा दिया।

एक मां पुकारे।
एक जननी कहे।
है कोई हिम्मत वाला।
है कोई जिगर वाला।
जो मां के बच्चे मिलवाए।
मां का दुख बंटाए।
मां जिसका जिगर धरती जितना।
(यह आवाज़ धीरे-धीरे शिखर तक जाती है तब एक नौजवान का आगमन होता है।)

नौजवान : *(यह आवाज़ गर्जन के समान है।)*
कौन है
जिसने
जवानी को पुकारा
ग़ैरत को ललकारा
हिम्मत को मनुहारा

औरत : एक मां ने पुकारा
ग़ैरत को ललकारा
हिम्मत को मनुहारा
काल के सौदागर आए
मौत के व्यवसायी आए
इन्होंने ग़ैरत खरीदी, पैसा दिया
इन्होंने आत्मा खरीदी, सोना दिया
इन्होंने बाल खरीदे, टुकड़ा दिया।
है कोई ग़ैरत वाला जो मां दुख बंटाए
मां जिसका जिगर धरती जितना।
(ढिंढोरची आते हैं।)

एक : ज़मीर के सौदागर आए।

दो : आत्मा के व्यवसायी आए।

एक : ज़मीर बेचो, सोना लो।

दो : आत्मा बेचो, पैसा लो।

नौजवान : *(चुनौती भरी आवाज़ में)*
ओए आत्मा के व्यावसायियो,

ओए ज़मीर के सौदागरो!

सौदागर : कौन है भाई?

व्यवसायी : किसने बुलाया है?

नौजवान : सच लेकर सचवाला आया।
ज़मीरों का मतवाला आया।
क्या मोल देना है?

सौदागर : चीज़ देखेंगे, मोल देंगे।

व्यवसायी : चीज़ देखेंगे, सौदा करेंगे।

नौजवान : तुम चतुर सौदागर।
तुम निपुण व्यवसायी।
चीज़ तो यह सीधी-साधी।
छल-फ़रेब के नजदीक न जाती।
जुल्मों के आगे यह न झुकती।
तूफानों के सामने यह न रुकती।
पकड़ गर्दन से अन्याय को नीचे धर लेती।
बस सिफ़त की बात यहां पर थमती।

सौदागर : यह तो बड़ी अक्खड़ चीज़ है।

व्यवसायी : यह तो बड़ी गुस्ताख वस्तु है।

नौजवान : अक्खड़ पर छल से खाली।
ऊषा पिए इसकी लाली।
हर युग में
शम्मा-ए-ज़िंदगी जलाई।
नाम लेकर इसका
ईसा सूली चढ़े।
बैठ अर्जुन गुरु
गर्म तवी पर जले
भगत सरदार शहीदों का
फांसी जा चढ़ा
जुल्मों के आगे यह न झुकती
सिफ़तों की बात यहां पर थमती।

सौदागर : अक्खड़ पर नशे से खाली?

व्यवसायी : शम्मा-ए-ज़िंदगी जिसने जलाई?

नौजवान : नाम लेकर इसका ईसा सूली चढ़े।
सुकरात ने दोनों हाथों से प्याला ज़हर का पकड़ा
अर्जुन गर्म तवी पर
बैठा और जले
सरदार शहीदों का
भगत सिंह, न फांसी से डरा।

सौदागर : शहीदों की आत्मा, क्या यह भी बिकने के लिए आए?

व्यवसायी : शहीदों की ज़मीर, क्या यह भी मोल लगवाए?

नौजवान : हां, अगर कोई मोल लगाए।
(वे अभी सोच रहे होते हैं कि शैतान की पीछे से गरजती आवाज़ आती है— हर हालत में सौदा करो, हर रोज का टंटा खत्म करो- अगर यह आत्मा अपनी, तो सबकुछ अपना, धरती अपनी, आकाश अपना।)

सौदागर : क्या मोल है लेना?

व्यवसायी : क्या मोल है लेना?

नौजवान : क्या मोल है देना?

सौदागर : सारा सोना।

व्यवसायी : सारा पैसा।

नौजवान : पैसे के भाव न यह बिकती।
सोने के बराबर न यह तुलती।

सौदागर : फिर क्या मोल है लेना?

व्यवसायी : फिर क्या मोल है लेना?

नौजवान : मां को बच्चों से मिलवाओ
सोने का बिछा जाल उठाओ
जकड़ी रूहें छोड़ो-छुड़वाओ।
धरती पर न फिर मुंह दिखाओ।

सौदागर : यह तो मूर्ख, अपने लिए कुछ नहीं मांगता।

व्यवसायी : यह तो कोई पागल, अपने लिए कुछ नहीं मांगता।

नौजवान : ईसा को भी लोग पागल कहते
ईसा को भी लोग पत्थर मारें
पागलों का काम
प्याले ज़हर के पी जाना

पागलों का काम
गर्म तवियों पर बैठ जाना
पागलों का काम
फांसी की रस्सी चूम जाना
पागल कहें
हम मरना चाहें
सच ने अमर रह जाना
क्यों सौदा मंजूर ?

सौदागर : है सौदा हमें मंजूर।

व्यवसायी : है सौदा हमें मंजूर।

नौजवान : एक हाथ दो, एक हाथ लो।

सौदागर : पहले एक तख़्त ले आओ।

व्यवसायी : काली एक चादर बिछाओ।

सौदागर : सौदा हो तो ऐसा।

व्यवसायी : वाणिज हो तो ऐसा।

(नौजवान उस तख़्त पर बैठ जाता है।)

नौजवान : मां को बच्चों से मिलवाओ।

(थैले में से आत्मा वापिस करते हैं, बच्चे मां की तरफ बढ़ते हैं।)

अद्वितीय दृश्य

नौजवान : जकड़ी रूहें छोड़ो, छुड़वाओ।

(दोनों ढिंढोरची ढोल और टीन फेंकते हैं, मूक अभिनय द्वारा आज़ादी का प्रभाव देते हैं।)

नौजवान : सोने का जाल हटाओ।

सौदागर : सब मंजूर, सब मंजूर।

व्यवसायी : सब मंजूर, सब मंजूर।

(नौजवान लेट जाता है, उसकी आत्मा की मुट्ठियां भर-भरकर वे थैले में भरे जाते हैं, पहले धीरे-धीरे फिर तेजी से। भगदड़ में हंफ कर गिर जाते हैं। फिर उठते हैं और फिर झोलियां भरते हैं। मां, एक और दो, अ और ब सबके चेहरों पर दर्द एवं मजबूरी का प्रभाव है।)

सौदागर : उठो नौजवान।
व्यवसायी : तू अब गुलाम हमारा।
सौदागर : तेरी आत्मा हमारी।
व्यवसायी : तेरी ज़मीर हमारी।
सौदागर : पर यह उठता क्यों नहीं ?
व्यवसायी : ठोकर मारो।
सौदागर : हांय इसका शरीर तो ठंडा हो गया।
व्यवसायी : यह तो कूच कर गया।
सौदागर : यह क्या हुआ ?
व्यवसायी : यह कैसे हुआ ?
औरत : मैं बताती हूं कैसे हुआ ?
सौदागर : कैसे हुआ ?
व्यवसायी : कैसे हुआ ?
औरत : शरीर कुछ हैं ऐसे होते।
आत्मा बिना न जीना चाहते।
सौदागर : हम तो लुट गए।
लोगो हम तो लुट गए।
व्यवसायी : लोगो हम तो लुट गए।
(पर लोग अब उन्हें पत्थर उठाकर मारते हैं। पत्थरों से बचने के लिए वे अपना साजो-सामान समेटते हैं।)
सौदागर : घर से घर गया।
व्यवसायी : बाहर से भड़वा कहलवाया।
(सिर पर पैर रखकर भाग जाते हैं। लोग और बच्चे नौजवान के शरीर पर फूल बरसाते हैं।)
छोटू : मां यह किस्सा क्या है ?
गुड़िया : मां यह कहानी क्या है ?
औरत : बच्चो कुछ लोग हर युग में आते
वे जीवन को
जीने लायक बनाते
जीवन का यह भेद है बच्चो
जीवन का यह भेद है बच्चो।